સપ્તપદી

॥ इष एकपदी भव ॥

તું પહેલું પગલું અન્ન માટે ભર

॥ ऊर्जे द्विपदी भव ॥

તું બીજુ પગલું બળ માટે ભર

॥ रायस्पोषाय भव ॥

તું ત્રીજુ પગલું સંપત્તિ માટે ભર

॥ मा यो भव्याय चतुष्पदी भव ॥

તું ચોથું પગલું સુખચેન માટે ભર

॥ प्रजाभ्य: पंचपदी भव ॥

તું પાંચમું પગલું સંતતિ માટે ભર

॥ ऋतुभ्य: षट्पढी भव ॥

તું છઠ્ઠુ પગલું ઋતુઓ માટે ભર

॥ सखा सप्तपदी भव ॥

તું સાતમું પગલું મિત્ર થવા માટે ભર

॥ कुर्यात सदा मंगलम ॥

॥ ॐ सखे सप्तपदी भव् ॥
આપણે વિચાર અને વર્તનમાં સંવાદિતા
ધરાવતા એવા સાચા સહ ચર બનીએ.

॥ ॐ ऋतुभ्य: षट्पदी भव् ॥
આપણે જીવનના તડકા-છાયા
સાથે ઝીલીયે.

॥ ॐ प्रजाभ्य पच्चपदी भव् ॥
આપણે સુસંતાન માટે
પ્રભુને પ્રાર્થીએ

॥ ॐ भयोभयाय चतुष्पदी भव् ॥
આપણે સુખી અને પ્રસન્ન
દામ્પત્ય જીવનનાસાથી બનીએ.

॥ ॐ शयस्पोषाय त्रीपदी भव् ॥
આપણે ઉદાત અને આદર્શ
જીવન જીવીએ

॥ ॐ ऊर्जे द्विपदी भव् ॥
આપણે સક્રિય અને ગતિશીલ
જીવનના સહભાગી બનીએ.

॥ ॐ इष एकपदी भव् ॥
આપણે જીવનપથનું પ્રથમ પગલું
સાથે માંડીએ.

સપ્તપદી

ॐ सखे सप्तपदी भव
તું સાતમું પગલું મિત્ર માટે ભર
Let us live like ideal friends who think and act alike

ॐ ऋतुभ्य : षट्पदी भव
તું છઠ્ઠું પગલું ઋતુઓ માટે ભર
Let us thnk and act together in all seasons and all stresses

ॐ प्रजाभ्यः पंचपदी भव
તું પાંચમું પગલું સંતતિ માટે ભર
Let us have worthy children

ॐ मा यो भव्याय चतुष्पदी भव
તું ચોથું પગલું સુખચેન માટે ભર
Lets us live happily together

ॐ रायस्पोषाय त्रिपदी भव
તું ત્રીજું પગલું સંપતિ માટે ભર
Let us live a Majestic life

ॐ ऊर्जे द्विपदी भव
તું બીજું પગલું બળ માટે ભર
Let us live together an active and energetic life

ॐ इष एकपदी भव
તું પહેલું પગલું અન્ન માટે ભર
Let us start our first step together

सज्जाति परम स्थाने सज्ज्ञातिं सद्गुणाययेनैः,
पुज्येत् सप्तवर्षाणि स्वर्ग मोक्ष सुखाकरम् ।।१।।
ॐ ह्रीं श्री सज्जाति परम स्थानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा.

सद्गृहस्थपरम स्थाने सद्गृहं जिननायकम्,
पुज्येत् सप्तवर्षाणि स्वर्ग मोक्ष सुखाकरम् ।।२।।
ॐ ह्रीं श्री सद्गृहस्थ परम स्थानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा.

पारिव्राज्य परम स्थाने परिव्राजस्य पूजनम्,
पुज्येत् सप्तवर्षाणि स्वर्ग मोक्ष सुखाकरम् ।।३।।
ॐ ह्रीं श्री पारिव्राज्य परम स्थानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा.

सुरेन्द्र परम स्थाने सुरेन्द्रा घेयकपूजितम्,
पुज्येत् सप्तवर्षाणि स्वर्ग मोक्ष सुखाकरम् ।।४।।
ॐ ह्रीं श्री सुरेन्द्र परम स्थानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा.

साम्राज्य परमं भूक्ते अर्यामि जिन पादुकम्,
पुज्येत् सप्तवर्षाणि स्वर्ग मोक्ष सुखाकरम् ।।५।।
ॐ ह्रीं श्री साम्राज्य परम स्थानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा.

अर्हन्नयं परमं स्थानं चतुःकर्म विनाशकम्,
पुज्येत् सप्तवर्षाणि स्वर्ग मोक्ष सुखाकरम् ।।६।।
ॐ ह्रीं श्री अर्हन्नयं परम स्थानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा.

निर्वाणं परम स्थानं निजभाषितमुत्तमम्,
पुज्येत् सप्तवर्षाणि स्वर्ग मोक्ष सुखाकरम् ।।७।।
ॐ ह्रीं श्री निर्वाणं परम स्थानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा.

सज्जाति, सद्गृहस्थत्वं, पारिव्राज्यं सुरेन्द्रता,
साम्राज्यं परमार्हंनयं निर्वाणं येति सप्तकम् ।।८।।
ॐ ह्रीं श्री निर्वाण परम स्थानाय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा.

The Seven Sacred Steps

॥ इष एकपदी भव ॥

To Provide for our household keeping & pure diet
& avoiding those things that might harm us

॥ ऊर्जे द्विपदी भव ॥

To Develop our physical mental
& spiritual power

॥ रायस्पोषाय भव ॥

To Increase our wealth by
righteous & proper means

॥ मा यो भव्याय चतुष्पदी भव ॥

To Acquire knowledge wealth happiness &
harmony by mutual love respect & trust

॥ प्रजाभ्यः पंचपदी भव ॥

To Be blessed with strong virtuous
& heroic children

॥ ऋतुभ्यः षट्पढी भव ॥

To Strive for self restraint &
longevity

॥ सखा सप्तपदी भव ॥

To Be true companions & remain
life long partners by this wedlock

॥ कुर्यात सदा मंगलम ॥

In presence of the holy fire as they take
their first steps into a new life of togetherness

1

कन्या

अपना सदाचार सदा
सुरक्षित रखना होगा ।

वर

मेरे गुरुजन और कटुम्बियों
की याथायोग्य विनय और
सेवा करनी होगी ।

2

कन्या

जुआ नही खेलना होगा ।

वर

मेरी आज्ञा को भंग
नही करना होगा ।

3

कन्या

अपनी सम्पत्ति पर मुझे अपने समान
अधिकार देना होगा ।

वर

कठोर और अप्रिय वचन
नहीं कहना होगा ।

4

कन्या

न्याय और उद्योग से उपार्जित धन से
मेरे भोजन, वस्त्र, आभुषण की व्यवस्था
करते हुए मेरी रक्षा करनी होगी ।

वर

घर पर मेरे हितैषी और सत्पात्रो के आने
पर उनका आदर -सत्कार और आहार
आदि के देने में कलुषित मन नही
करना होगा ।

5

कन्या

तीर्थस्थान, जिनमंदिर आदि
धर्म स्थानो में जानें मे बाधक न हो,
धार्मिक कार्यों से मुझे
वंचित नहीं करना होगा ।

वर

मेरी आज्ञा बिना दूसरे के घर नही
जाना होगा ।

6

कन्या

अनुचचित और कठोर दण्ड
मुझे नहीं देना होगा ।

वर

जहां बहुत भीड् हो, जैसे मेला आदि
में तथा जिनका आचरण और धर्म
खराब है, एसे मद्यादि पीने वालों तथा
विधर्मियों के घर कभी नही
जाना होगा ।

7

कन्या

मुझे जीवन पर्यन्त नहीं त्यागना होगा ।

वर

अपनी कोई भी गुप्त बात मुझसे
नहीं छिपानी होगी और मेरी
गुप्त बात किसी दूसरे से नहीं
कहनी होगी ।